

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

# VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 89	Year 10	Volume 7	August 2020 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150
------------------	----------	---------	----------	---------------------------	---------	--

## मौत का भय

बहुत समय पहले एक कहानी पढ़ी थी—महात्मा बुद्ध के पास एक महिला अपने लड़के को लेकर आई और बोली, महात्मा यह मेरे नियन्त्रण से बाहर हो गया है, मेरी एक नहीं सुनता। इसके पिता तो है नहीं, कृप्या आप ही इसका कोई इलाज करें। बुद्ध बोले—देवी इसका इलाज करने का कोई फायदा नहीं क्योंकि इसका शेष जीवन मात्र सात दिन है। वह महिला दुखी व स्तब्ध अपने लड़के को लेकर वापिस आ गई। चार दिन बाद बुद्ध



उस महिला के घर गये और पूछा क्या अब भी यह आपको पहले की तरह ही सताता है कि कुछ सुधार है। महिला तुरन्त बोली, महाराज आप सताने की बात कर रहे हैं, जिस दिन से इसे पता लगा है कि अब इसका अन्त नजदीक है, इसका व्यवहार बिल्कुल बदल गया है। आज हम सब भी मौत के डर से भयभीत हैं, परन्तु देखने वाली बात यह है कि क्या हमारा भी व्यवहार पहले से अच्छा हुआ है। हां एक बात अवश्य हुई है कि पहले से खर्च कम करे हैं और बचत अधिक, ताकी परवासी श्रमिकों की तरह मुश्किल में सड़को व रेलवे ट्रेक पर न मरें।

Contact:

**BHARTENDU SOOD**

Editor, Publisher & Printer

# 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047

Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,

E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

इसी संन्दर्भ में एक और कहानी पढी। —एक युवक मछुआरा समुद्र में मछलियां पकड़ता और उन्हें बेचकर अपनी जीविका चलाता था। एक दिन एक व्यक्ति मिला वह उसे मछलियां पकड़ते देखता रहा। जब वह काम से निवृत्त हुआ तो वह व्यक्ति उसके पास आया और पूछा—मित्र क्या तुम्हारे पिता भी यही काम करते हैं.? उसने जबाब दिया करते थे, पर अब वह जीवित नहीं। उन्हें समुद्र की एक बड़ी मछली निगल गई। उस व्यक्ति ने फिर पूछा—और तुम्हारा बड़ा भाई? मछुआरे ने जवाब दिया, नौका डूब जाने के कारण वह भी समुद्र में समा गया। उस व्यक्ति ने जिज्ञासा वश फिर पूछा—दादा और चाचा की मृत्यु कैसे हुई। मछुआरे ने जवाब दिया, मित्र वह भी समुद्र में ही लीन हो गये। वह व्यक्ति बोला—बड़ी हैरानगी की बात है कि यह समुद्र तुम्हारे परिवार के विनाश का कारण है, तुम इसे जानते हुये भी इसी समुद्र में मछलियां पकड़ते हो। क्या तुम्हें मरने का डर नहीं? मछुआरा उस की बात सुन कर उस व्यक्ति से बोला—कृप्या अब आप बतायें कि तुम्हारे दादा और पिता कहां हैं? वे अब इस दुनिया में नहीं। वे रूग्ण हो कर स्वर्ग सीधार गये। उस व्यक्ति ने जवाब दिया। मछुआरा बोला—देखो मित्र, वे तो इस समुद्र में नहीं आये फिर भी मौत उनको ले गई। मौत कब आती है, कैसे आती है, यह आज तक कोई समझ नहीं पाया। फिर मैं मौत से बेकार में क्यों डरू।

जहां तक मैं समझ पाया हूं, महात्मा बुद्ध के कथा कें पात्र वे लोग हैं जिन्हें ईश्वर ने सब कुछ दिया होता है। दूसरी अर्थात् मछुआरे की श्रेणी में वे आते हैं जो सुवह कमाते हैं व शाम को खाते हैं, उन्हें इस कोरोना में भी कोई भय नहीं, काम में लगे हुये हैं। इस कोरोना संक्रमण में खुल कर सामने आया है। जिस व्यक्ति के पास जितना अधिक धन है उतना अधिक ही उसका डर है। हमारी प्रवृत्ति भौतिक वस्तुओं का संग्रह कर उस के साथ चिपके रहने की है। केवल मृत्यु ही इस संग्रह को हम से अलग करने में सक्षम है। इसलिये स्वभाविक तौर पर जिस के पास जितना अधिक है वह उसे खोने के विचार से मृत्यु से उतना ही डरता है।

आसमयिक मृत्यु को छोड़ दी जाए, मृत्यु तो मनुष्य पर उस समय बहुत बड़ा उपकार करती है जब कि उसका शरीर शिथिल हो चुका होता है, वह विभिन्न रोगों से पीड़ित होता है और हर चीज के लिये दूसरों पर आश्रित हो गया होता है। क्या हम स्वयं नहीं कहते, उसे ईश्वर ने मुक्ति दी है। जरा सोचिये, यदि मृत्यु न होती तो यह संसार कैसा होता। इसलिये ठीक कहा है हमारे ज्ञान की कमी ही हमें मृत्यु से भयभीत करती है। तभी तो महामृत्युंज्य मन्त्र में मनुष्य ईश्वर से प्रार्थना करता है कि हे ईश्वर जन्म मृत्यु आप के वश में है, जब मेरा जीवन पूरा हो जाये, अंग शिथिल हो जाये तो मृझे वैसे ही उठा लें जैसे बेल पर लगा हुआ खरबूजा पकने पर स्वयं अलग हो जाता है।

भारतेन्दु सूद

### Why adaptability is necessary

It is not the most intellectual of the species that survives; it is not the strongest that survives but the one that is able to adapt to and adjust best to the changing environment in which it finds itself. It applies to Covid-19 too as many experts believe that it is going to stay.

## कृपया ध्यान दे ।

हम आपको लोकडाउन व दूसरे कारणों से वैदिक थोटस के चार संस्करण आप तक नहीं पहुंचा सके। हमें खेद है। आपको इन चार महीनों का खुलक नहीं देना है। इस कारण जिन का शुल्क आया हुआ है व जनवरी 2020 से ओं तक था वह चार महीने आगे तक माना जायेगा। उदाहरण के लिये अगर शुल्क फरवरी 2020 तक था जो अब वह जून 2020 तक होगा। धन्याबाद।

शिमला का SHARDA

# कामधेनु जल

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए  
एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 0172-2662870, 9217970381

Marketing Office - H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047

## पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप बैंक या कैश निम्न बैंक में जमा करवा सकते हैं :-  
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414  
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272  
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का बैंक भेज दें।

## स्वयं का त्याग कर की हुई सेवा मनुष्य को देवताओं की श्रेणी में ले जाती है

भारतेन्दु सूद



यह बात इटली देश की है जहां कारोना से बहुत अधिक मौतें हुई हैं। एक अस्पताल में मरीजों का इलाज चल रहा था। परन्तु वैटिलेटरों की कमी थी व जितने चाहिये थे उतने नहीं थे। डाक्टर जब एक बूढ़े मरीज को वैटिलेटर पर लगाने लगा तो वह बोला—डाक्टर साहब मैं जानता हूं वैटिलेटर उतने नहीं जितने चाहिये, इस लिये मुझ से पहले यह वैटिलेटर किसी युवा मरीज को उपलब्ध करवाईयें। डाक्टर उस की त्याग की भावना को देखकर मुग्ध था व उसने दूसरे युवा गम्भीर मरीज को वैटिलेटर पर लगा दिया। दया, करुणा, उदारचित व स्वेदनशील होना एक ईश्वर भक्त के स्वभाविक गुण होते हैं। कारण, ये ईश्वरीय गुण होते हैं। जब हम पूरी श्रद्धा के साथ ईश्वर भक्ति करने लगते हैं तो स्वभाविक तौर पर ये हमारे अन्दर आने लगते हैं।

यदि आप इस लोकडाउन के कारण मन्दिर, गुरद्वारा मस्जिद में नहीं जा पा रहें कोई बात नहीं परन्तु आप निस्वार्थ सेवा व दया, करुणा, उदारचित व स्वेदनशील जैसे गुणों द्वारा ईश्वर के नजदीक रह सकते हैं। यह भी सत्य है कि निस्वार्थ सेवा के लिये किसी को भी अपनी स्वयं की सुरक्षा से बाहर निकलना ही पडेगा। जैसे की अमृतसर के पटवारी पद पर आसीन सरदार कुलवन्त सिंह लेहरी ने बताया। जिन शवों को मरने वालों के सगे रिश्तेदारों, जिन में अपने बच्चे भी आते हैं, ने ही लेकर संस्कार करने से इन्कार कर दिया, ऐसे 20 करोना मरीजों के शवों को उन्होंने ले जाकर अग्नि दी।

यदि हम कुछ निस्वार्थ सेवा के काम करते रहें तो हमें ऐसा लगेगा कि ईश्वर मुझ से खुश है। ऐसा आन्नद ही मुक्ति है। मुक्ति का अर्थ ही सदैव रहने वाला आन्नद है। ईश्वर का हर हालत में धन्यवाद करते रहें और जो कोई दुखी मिल जाता है उसे ईश्वर का रूप समझ कर सेवा कर दें प्यार दे दें, यही ईश्वर भक्ति है।

इस करोना लोकडाउन के दौरान बहुत सी ऐसी बातें भी पढ़ी जिन्होंने दिल को बहुत खुश किया, बहुत सी ऐसी भी पढ़ी जिन्होंने दिल को बहुत दुख पहुंचाया। अच्छा करने वाले भी इंसान है और बुरा करने वाले भी,



परन्तु सोचने की बात यह है कि दोनों में फर्क क्यों? मेरा मानना है अच्छा करने वालों ने ईश्वर को और ईश्वर भक्ति को समझा है जब कि दूसरों ने नहीं समझा। इसलिये ईश्वर को समझना भी आवश्यक हैं। जैसे ही आप निस्वार्थ सेवा में लग जाते हैं तो ईश्वर क्या है इस की समझ आने लगती है। भाई कन्हैया से जब गुरु गोविन्द सिंह कहते हैं कि हमारे सिपाहियों की यह शिकायत है कि आप जख्मी मुगल सेना के सिपाहियों को भी पानी पिलाते हो तो भाई कन्हैया बालने—गुरु जी, मैं क्या करूं, मुझे तो उन में भी भगवान ही नजर आता है। यह है ईश्वर भक्त की निशानी।

कुछ समय पहले मैं महात्मा आन्नद स्वामी की लिखी उनके जीवन की घटनाये पढ़ रहा था। उस समय जब भी देश समाज पर कोई आपत्ती टूट पड़ती तो आर्य समाज आगे आया करता था। ऐसी ही कहानियों में देश के एक कोने में फैली प्लेग बिमारी का किस्सा था। कोरोना का कहर उस के सामने कुछ भी नहीं। गांव के गांव उजड़ जाया करते थे व शवों को जलाने वाला भी कोई नहीं रहता था। ऐसे ही एक स्थान पर महात्मा आन्नद स्वामी अपने साथियों के साथ पहुंचे। उनमें कुछ को फर्स्ट ऐड की शिक्षा प्राप्त थी। एक व्यक्ति पीड़ा से कराह रहा था। उस की जान बच सकती थी यदि उसकी गिलटी को काट दिया जाता। अन्धेरा था, काटने के लिये बलेड नहीं मिल रहा था। ऐसे में उन के एक साथी न दांता से गिलटी काट दी व उस व्यक्ती की जान बच गई।

### **सूर्य चन्द्र के स्वस्थी पथ पर हे प्रभु चलते रहें दानी, ध्यानी, आहिंसक बन सत्संग सदा करते रहें।।**

यह संदेश ऋग वेद के मन्त्र में है जिसका भाव है कि हे ईश्वर, हम पर ऐसी कृपा करें कि जैसे सूर्य और चन्द्रमा सारे संसार और प्राणीजगत का कल्याण अपनी किरणों द्वारा करने में लगे हुये हैं, उसी तरह हम भी बिना किसी भेद भाव के दूसरों के कल्याण में लगे रहें। यह परोपकार तभी संभव है जब हम दानी बने, आप का ध्यान करके आप के ईश्वरीय गुणों को धारण करे, किसी भी तरह की हिंसा न करें और इन साधनों द्वारा सत्संग में ही रहें।

May we follow and traverse the path of benevolence like the Sun and the Moon and achieve this by remaining in a good company which is possible with charities, by communing with You and following nonviolent and peace generating methods.

इस मन्त्र के तीन भाग हैं। पहले भाग में कहा गया है हम दूसरों के कल्याण में लगे रहें। जब हम अपने जीने का ढंग ऐसा बना लेते हैं तो हम कह सकते हैं कि हम कल्याणकारी मार्ग पर चल रहे हैं। यह कल्याणकारी मार्ग ही हमें मोक्ष अर्थात् परम आन्नद तक ले जा सकता है। यह कल्याणकारी मार्ग ही हमारे इस लोक को और परलोक को सुधारने वाला होता है। हम अपना भला तो करते हैं पर दूसरों का भी भला करते हैं और ऐसे करते हुये यश के पात्र बनते हैं। इसी मार्ग को गुरु नानक देव ने सच्चा मार्ग उचारा है।

**गुरुवाणी में आया है—सुच्चे मार्ग चलदियां उस्तत करे जहान। अर्थात् जो मानव सच्चे और कल्याणकारी मार्ग पर चलता है, उसकी प्रशंसा सारा संसार करता है।**

कठोपनिषद में ऋषि यमाचार्य ने इस कल्याणकारी मार्ग को ही श्रेय मार्ग कहा है। ऋषि यमाचार्य

निचिकेता को कहते हैं—दो मार्ग श्रेय और प्रेय मनुष्य को अपनी अपनी और आर्कषित करते हैं। इन दो में श्रेय मार्ग ही कल्याणकारी मार्ग है। दूसरा मार्ग प्रेय अच्छा और सुहावना तो लगता है पर वास्तव में यह मनुष्य को अच्छाई से दूर ले जाता है।

दूसरे भाग का अर्थ है कि जैसे सूर्य और चन्द्रमा सारे संसार और प्राणीजगत का कल्याण अपनी किरणों द्वारा करने में लगे हुये हैं हम भी उसी तरह विना किसी भेद भाव के दूसरों के कल्याण में लगे रहें।

अग्नि का मूल स्रोत सूर्य है। सूर्य ही अपने और सौर जगत का जीवन ज्योति और प्राण है। उसकी उषमा और प्रकाश से रंगरूप और संसार की हर वस्तु दिखाई देती है। प्राणियों को जीवन शक्ति प्रदान करने के साथ साथ सूर्य में और भी बहुत से गुण हैं जो सूर्य की महानता को दर्शाते हैं। सूर्य महान दानी है जो कि अपनी उर्जा और प्रकाश का दान अरबों खरबों सालों से बिना किसी भेद भाव के दे रहा है। सूर्य और चन्द्रमा दोनों नियम पालकता के परिचायक भी हैं इसी कारण भगौलिक विज्ञान जैसे पंचांग है, का इन को आधार भी माना जाता है। इस कारण जो सूर्य चन्द्रमा की भान्ति दूसरों को प्रकाश देता है और अपने जीवन में अनुशासन रखता है वही मनुष्य है और कल्याणकारी मार्ग का पथिक भी।

सूर्य के अनेक विलक्षण गुणों के कारण ही वेद बार बार हमें सूर्य का अनुसरण करने की प्रेरणा देते हैं। ऋग्वेद में एक अन्य स्थान पर आया है।

**तन्तु तन्वन, रजसो भानु मन्विहि**

**हे मनुष्य तू जीवन के ताने वाने को बुनते हुये आकाश के सूर्य का अनुसरण कर।**

**सामवेद भी कहता है, अहं सूर्य इवाजिन**

**मैं सूर्य के समान हो जाऊँ। सूर्य में जो तेज है वह हम में आ जाये।**

मन्त्र के अन्तिम भाग में तीन गुणों का वर्णन है जिन्हे धारण करने के लिये हम इन तीन गुणों के धारणकर्ता मनुष्यों की संगत में रहने का प्रयत्न करें।

सब से पहले हमें दानशील व्यक्ति के समीप रहने का यत्न करना चाहिये। उन लोगों को देखकर हमें भी दान करने की प्रेरणा मिलेगी, क्योंकि हम जानते हैं जैसी संगत वैसी रंगत। एक कहावत है **Charity is the salt of rich** दान देने से धन वैभव का निवास हमारे घरों में चिरस्थाई हो जाता है।

जिस दूसरे गुण की बात की गई है वह है अधनता अर्थात् जो हिंसा न करता हो। अगर हम स्वयं दुखी नहीं होना चाहते तो हमें भी किसी को मन, वचन और कर्म से दुखी नहीं करना चाहिये और न ही किसी का बुरा सोचना चाहिये।

तीसरा गुण है जानता अर्थात् ज्ञानी बनें। ज्ञान ही हमें उचित—अनुचित के बारे में बताता है और ज्ञान के बिना अज्ञान और अंधकार को खत्म नहीं किया जा सकता। अतः जो भी यह तीन गुण दान देना, अहिंसा का पालन करना और ज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न को जारी रखेगा उस का कल्याण अवश्य ही होगा।

किसी कवि ने इस का बहुत सुन्दर अनुवाद किया है  
 सूर्य चन्द्र के कल्याणकारी पथ पर हे प्रभु हम चलते रहें,  
 दानी, ध्यानी और ज्ञानी के साथ सत्संग सदा करते रहें  
 यही कल्याण का मार्ग है और यही श्रेय मार्ग है।

## Digital strikes can't be a substitute for territorial one

Union Minister Ravi Shankar Prasad is thumping his chest by referring to the ban on Chinese apps as a digital strike. He should know that digital strikes cannot be a substitute for territorial strikes needed to recapture the territory taken away by China. Again, when we need FDI for the revival of the economy and China is one of the big contributors, we need to act cautiously. The government may derive solace or present to the gullible masses that it has indeed taken revenge but the fact of matter is that China is too big an economy to be affected by such actions. They have enough money to throw around. It is their capacity to invest in other countries that has made all our neighbouring countries pro-China.



## Let us accept that we miserably failed to control both, virus as well as economy

Our Covid-19, cases have crossed 15 lacs but the authorities invariably choose USA and Brazil, two countries at the bottom, to compare country's performance in fighting Covid-19. They conveniently ignore all eastern countries including our neighbors who have done far better. We are covering up our wrong decision to lock down the entire country, which put our economy into the tailspin, by taking the pretext that country had not the required infrastructure and facilities to fight Covid-19. My question to them is which other country had the required preparedness. Do they think Sri Lanka or Vietnam had. Instead of always looking for the reasons to indulge in chest thumping, let us accept that we failed at both. Covid-19 as well as economy and the leader must own it gracefully.

The lesson is that we should stop taking decisions in haste and the top man should involve others even the opposition parties. There is no use of consulting others when things after things go out of control as Mr Modi did after two months. 30% of our population has remained unaffected economically by the closure of economy so they keep on extending support to the dismal performance of the government.

## Then don't be King



**Dinesh Sood**

Demetrius I was King of Macedonia from 294 to 288 BC. Early in his rule the King was infamous for treating appeals for justice from ordinary public with disdain. He once collected a bunch of petitions from the villagers only to throw the petitions into the river without even so much as looking at the these. By his behavior he earned the wrath and resentment of ordinary citizens.

His biographer Plutarch describes an interesting incident during the King's brief reign. Once when the King was on a journey, an old woman approached the King and asked for an audience. The King ignored her plea by telling her that he was too busy. On hearing this the angry woman shouted: "Then don't be King". Stung by the rebuke, the King stopped his journey and starting with the old woman, decided to give audience to all those who asked for it.

Plutarch concludes, "And indeed there is nothing that becomes a king so much as the task of dispensing justice."

And while dispensing justice, the King should not have any consideration other than making sure that law of land is upheld even if it means personal sacrifice of the highest order. Choladynasty King Ellalan ruled over Anuradhapura Kingdom (present day Sri Lanka) around 250 BC. Legend has it that he had a bell hung outside his palace. Anybody wanting justice can ring the bell and King would come forth and attend to the complaint of the petitioner. One day on hearing the repeated chimes of the bell the King came out to find that an agitated cow was ringing the bell nonstop. On enquiry, the people told the king that the calf of the cow has been killed by getting trampled under the wheel of a chariot. To his great dismay, the King learnt that the person driving the chariot was none other than his own son. However, in keeping with the system of retributive justice of that time (an eye for an eye), the King ordered his own son to be killed by being run under the wheel of a chariot. Even though it caused him immense personal anguish and pain, the King upheld the rule of law while dispensing justice.

In honor of Ellalan's policy of equitable justice for all, he was popularly known by the name "Manu NeedhiCholan" (Chola who follows justice).



**Bell and Cow of Manu NeedhiCholan**

society with equity.

One of the most successful Prime Ministers of independent India, late Sh. Atal Bihari Vajpayee, when asked what advise he has for a ruler, said that a ruler should follow Rajdharma. (Religion of the King). According to him the essence of Rajdharma was:

“Rajdharma means that the King cannot make distinction between his subjects based on birth, caste or community.”

In brief we can say that:

1. A King has no right to be the King if he does not have time or inclination to listen to the grievances of ordinary people including the most deprived sections of society
2. While performing his duties the King should not make a distinction between his subjects based on their beliefs, caste, religion or status
3. The King should uphold the principals of justice and equity above all other considerations even if it means a loss to the State, his affiliates or great personal inconvenience to the King

And lastly, just like the old lady of pre biblical times, it is the duty of every citizen to remind the King or the Ruler of his responsibilities when found wanting. If we fail in our duty, we have no right to complain when injustice is done. After all, we get the rulers we deserve.

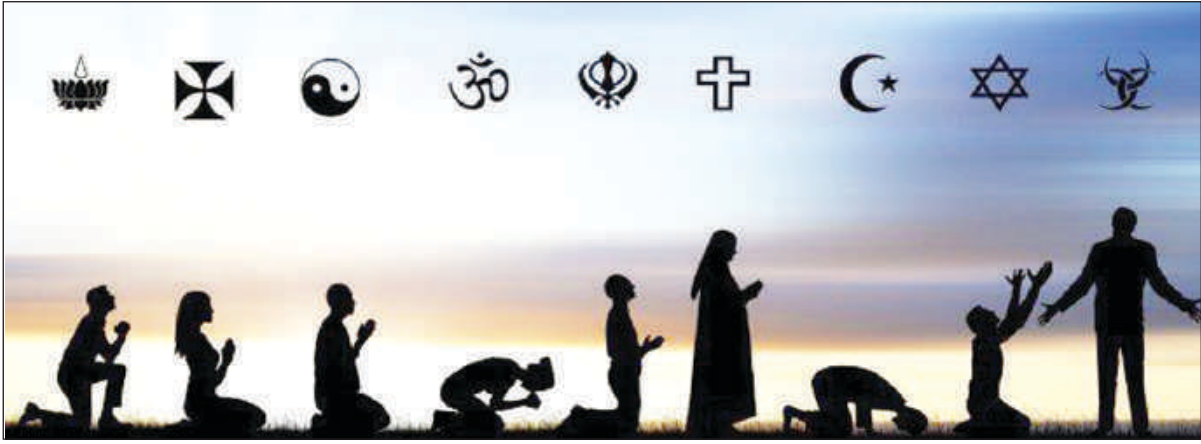
**Write is the Reitred Sr. Executive From Reliance Industries**



# प्रतीकों में नहीं मनुष्य की सेवा में निहित है वास्तविकता

सीताराम गुप्ता

समाचार पत्र में एक समाचार पढ़ा तो उर्दू षाइर असरारुल हक मजाज साहब का एक षेर याद आ गया – तिरे माथे पे ये आंचल बहुत ही खूब है लेकिन, तू इस आंचल से इक परचम बना लेती तो अच्छा था। यदि इस षेर की तषरीह करने बैठें तो पूरी एक किताब लिखी जा सकती है। अब उस



समाचार की बात करते हैं जिसे पढ़कर ये षेर याद आया। कनाडा में दो डॉक्टर भाइयों ने कोरोना के मरीजों का ठीक से इलाज करने के लिए अपनी दाढ़ियां कटवा लीं। दाढ़ी के साथ पूरे दिन मास्क पहनना और ठीक से मास्क पहनना संभव नहीं हो पा रहा था। मास्क ठीक से न पहनने से डॉक्टरों से मरीजों के और मरीजों से डॉक्टरों के संक्रमित होने का खतरा बढ़ जाता है इसमें संदेह नहीं। ऐसे में उनके पास ये नौकरी छोड़ देने का विकल्प था लेकिन इन विशम परिस्थितियों में मानवता की सेवा के लिए उन्होंने धर्म के एक प्रतीक दाढ़ी का त्याग करना उचित समझा।

किसी भी धर्म में प्रतीकों का बड़ा महत्त्व होता है। ऐसे समय में जब प्रायः सभी धर्मों के लोग प्रतीकों को लेकर अत्यंत आग्रही हों ऐसा निर्णय असंभव नहीं तो कठिन अवष्य है। एक अत्यंत सकारात्मक सोच एवं दृढ़ इच्छाशक्ति वाला व्यक्ति ही ऐसा निर्णय ले सकता है कोई साधारण व्यक्ति नहीं। उनका ये निर्णय धर्म-अध्यात्म में प्रतीकों के नाम पर अति संवेदनशीलता अथवा कठमुल्लेपन पर पुनर्मूल्यांकन का अवसर भी देता है। हर धर्म के व्यक्ति को हम प्रायः उसकी वेषभूशा अथवा उसके बाह्य स्वरूप से पहचानते हैं। इसी प्रकार से हर धर्म के कुछ धार्मिक चिह्न होते हैं जिन्हें प्रतीक कहा

जाता है। इन्हें भी हम दूर से पहचान लेते हैं। प्रश्न उठता है कि यदि ये प्रतीक न हों तो क्या धर्म धर्म नहीं रहेगा? वह कुछ और हो जाएगा? इसके लिए धर्म के वास्तविक स्वरूप को जानना अनिवार्य है।

धर्म की विभिन्न परिभाषाएं मिलती हैं। उनका विश्लेषण करें तो एक बात स्पष्ट हो जाती है कि हर धर्म में कुछ अच्छी बातें होती हैं। धर्म उन्हीं सद्गुणों के योग को कहते हैं। धर्म वह तत्त्व है जो जीवन को सकारात्मकता व सात्त्विकता प्रदान करने में सक्षम होता है। वह समाज को सुचारु रूप से संचालित करता है। धर्म को जीवन में समाहित करने के लिए एक आचार-संहिता और कुछ प्रतीक चिह्न होते हैं। जब हम अपने धर्म के प्रतीकों को देखते हैं तो उससे जुड़े सद्गुण याद आ जाते हैं। यही है प्रतीकों का महत्त्व। प्रतीक साधन होते हैं साध्य नहीं। ये बाह्य तत्त्व होते हैं आंतरिक नहीं। यदि किसी धर्म के मानने वाले धर्म में वर्णित अच्छी बातों का पालन नहीं करते तो उस धर्म के प्रतीक धारण करने का भी कोई महत्त्व अथवा औचित्य नहीं रह जाता। प्रतीकों को धारण करने अथवा उनकी पूजा करने मात्र से कोई धार्मिक नहीं हो जाता। मानवता की सेवा का भव अवश्य किसी को धार्मिक बना देता है।

हर धर्म में सत्य, अहिंसा अथवा त्याग पर जोर दिया जाता है। यदि हम अपने धर्म अथवा प्रतीकों की रक्षा के लिए असत्य अथवा हिंसा का सहारा लेते हैं तो धर्म तो वहीं समाप्त हो जाता है। इसके विपरीत यदि हम प्रतीकों की परवाह किए बिना धर्म में वर्णित सद्गुणों अथवा सेवा को जीवन का उद्देश्य बना लेते हैं तो इससे बड़ा तो कोई धर्म ही नहीं हो सकता। प्रतीकों का अपमान करना किसी भी तरह से उचित नहीं कहा जा सकता लेकिन मानवता की सेवा के लिए उनका त्याग किया जा सकता है। त्याग भी हर धर्म का प्रमुख तत्त्व है। त्याग से तात्पर्य मात्र धर्म के लिए मर-मिट जाना ही नहीं होता अपितु मानवता की सेवा के लिए किसी भी प्रकार का त्याग धर्म ही है। विश्व परिस्थितियों में ही नहीं सामान्य अवस्था में भी प्रतीकों का त्याग धर्म का त्याग नहीं है। धर्म तो अच्छे गुणों का समूह होता है उन्हें त्यागा ही नहीं जा सकता।

आज दुनिया में बहुत से धर्म-संप्रदाय मौजूद हैं। क्या दुनिया में एक धर्म से काम नहीं चल सकता? चल सकता है लेकिन अनेक धर्म-संप्रदायों के मौजूद होने के कई कारण हैं। जब किसी धर्म में मूल अथवा आंतरिक तत्त्व कमजोर हो जाते हैं और प्रतीक उन पर हावी होने लगते हैं तो ऐसे में धर्म का विकास होने की अपेक्षा उसका ह्रास होने लगता है। ऐसे में कुछ लोगों के लिए उस धर्म की आचार-संहिता का पालन करना कठिन हो जाता है। अतः वे किसी दूसरे धर्म की षरण में चले जाते हैं अथवा नए रूप में अन्य नाम से नया धर्म ही स्थापित कर देते हैं। इसी तरह से देष-काल के अनुसार भी धर्म बदल जाता है। लेकिन इस परिवर्तन में धर्म के मूल तत्त्व अर्थात् उदात्त जीवन मूल्य कभी नहीं बदलने चाहिए।

विशम परिस्थितियों में अथवा किसी आपदा की स्थिति में किसी धर्म की अच्छी बातों के क्रियान्वयन का रूप बदल जाना उसके जीवंत होने का प्रमाण है। विशम परिस्थितियों में दिनचर्या अथवा जीवनचर्या में परिवर्तन स्वाभाविक है। यदि ऐसा करने की अनुमति नहीं मिलती है तो या तो उस तथाकथित धर्म का त्याग करना होगा या फिर धर्मपालन अथवा कर्तव्यपालन के रूप में जो कमी आएगी उसे स्वीकार करना होगा। इसीलिए आपद्धर्म का भी विधान है। विशेष परिस्थितियों में उसका पालन अनिवार्य है। वैसे तो हम पूजा-पाठ अथवा इबादत घर पर भी कर सकते हैं लेकिन इसके लिए हम प्रायः मंदिर, मस्जिद, चर्च अथवा गुरुद्वारों में ही जाते हैं।

जब हर जगह कोरोना वायरस के संक्रमण का खतरा है तो ऐसे में नियम-कानूनों की परवाह न करके सार्वजनिक प्रार्थना-स्थलों पर इकट्ठे होकर पूजा-पाठ अथवा इबादत करना न केवल घातक है अपितु अपराध भी है। धर्म में अपराध के लिए कोई स्थान नहीं होता। नियमों का पालन न करना अपराध ही नहीं अधर्म भी है। जब हम प्रतीकों से बंध जाते हैं तो किसी भी रूप में धर्म का पालन असंभव हो जाता है। धर्म का पालन वास्तव में कर्तव्य का पालन ही होता है। जब कुछ लोग मानवता की सेवा के लिए धर्म के बाह्य प्रतीकों का त्याग कर सकते हैं तो क्या हम अपनी स्वयं की सुरक्षा के लिए आवश्यक निर्देशों का पालन भी नहीं कर सकते? यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो हमारा धर्म और हम अत्यंत संकुचित जीवन दृष्टि से पीड़ित हैं।

## M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

( An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins “ VEDIC THOUGHTS” in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

**दूसरों से सीखने की क्षमता आपको उपर ले जाती है**

यदि हम उन महान व्यक्तियों का जीवन पढ़ें जिन्होंने इस संसार को परिवर्तित किया है तो एक बात जो हमें उन सब में नजर आयेगी वह यह है कि उन में दूसरों से सीखने की अपार क्षमता थी। वह कभी भी यह महसूस नहीं करते कि हमने सब कुछ सीख लिया है। यह दूसरों से सीखने की ईच्छा व आदत न केवल उन व्यक्तियों को अलग श्रेणी में ला कर रख देती है परन्तु उस से एक बड़ा लाभ यह होता है कि उनके जीवन में यह भावना कभी नहीं आती कि मैंने जो कुछ पाना था पा लिया है, जो कुछ करना था कर लिया है, अब तो मेरा आराम का समय है। बल्कि उन में सदैव एक बच्चे की तरह कुछ नया व कुछ और करने की ईच्छा मनी रहती है जो कि उनको मन से जवान बनाये रखती है। इसी भावना का मन में रहना ही जीवन है।

### SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

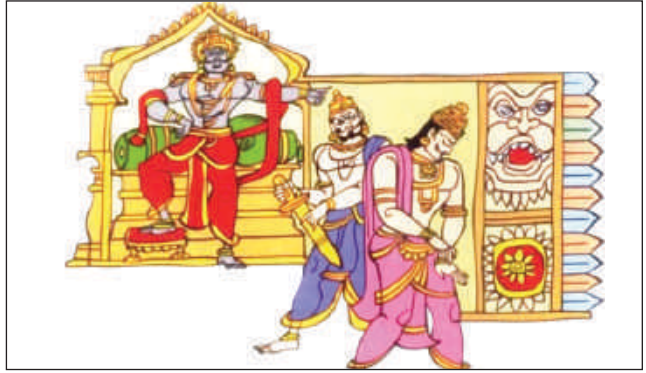
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

# Why does Ramayana episode evoke sympathy for Ravana

Bhartendu Sood

It is paradoxical that Ravana who was associated with a heinous crime of kidnapping a married woman with decept should invoke sympathy of many as the episode rolls. What is that which makes one forget of his heinous crime for some time.



As the events post Sita abduction reveal Ravana lost the war not because Rama was the most powerful and invincible warrior at that time but because

his own brother Vibhishana helped Rama at the crucial stages of war by revealing the secrets which resulted in the annihilation of all the important warriors in ravana family, whether it was his son Meghnath or brothers Kumbhkarn and Ahi Ravana.

It justifiably ignites discussion on the role of Ranana's brother Vibhishna during the Ravana-rama was.for was.

There is conflict between two different interpretations of dharma with regard to role played by Vibhishna. One , he helped rama so that Ravana could be given punishment for his arrogance, his propensity to keep his own sefish motive above the interest of the nation, his indulging in deceitful act of kidnapping Rama's wife sita all falling in the category of adharma. At the same time the second interpretation of dharma demanded that even though he was humiliated and thrown out of lanka by his elder brother ravana, he should have avoided sharing such secrets which resulted in the annihilation of Ravana and his powerful warriors and ultimately destroyed a beautiful Lanka , more beautiful than Alkapuri in the words of Rama even. It was construed to be betrayal of family, nation and elder brother. During khumbkarna and Vibhishna dialogue when vibhishna approaches Kumbhkarna with a proposal to bring his to Rama's side Kumbhkarna beautifully elaborates his duty towards the nation, his own country men and above all his elder brother though he had abandoned the right path but it was his duty to stand by him and even if he doe not stand by to refrain from harming him. Khumkarna's lecture on dharma makes vibhishna realize his wrong for some time until he was again counselled by Rama.

Indeed, if kidnapping is reckoned as a crime in all systems of jurisprudence, then treason and sedition are considered even more serious crimes not only in IPC but in all systems around the world and the death penalty is the punishment for latter in most of the countries.

Therefore, not surprising that as the episode rolls on National network ( Door darshan) many amongst has sympathy for Ravana.. Crux is that no body even if he is a nobel soul is respected if he acts against his own country, own people and the family.



# अभिवादन नमस्ते

अम्बाराम सिद्धान्त शास्त्री

भारत एक धर्मप्रधान देश है। कभी यहाँ की रमणीय उज्ज्वल भूमि ऋशियों द्वारा वेदों की ऋचाओं से गुंजायमान होती थी और यज्ञ हवन की सुगन्धी से सुगन्धित रहती थी। जब कभी भी यहाँ के लोग परस्पर मिलते थे तो नमस्ते द्वारा ही आपस में अभिवादन किया जाता था। नमस्ते शब्द ही अभिवादन का सबसे प्राचीन और आदरपूर्ण शब्द है। नमस्ते दो शब्दों से मिलकर बना है। नमः+ते=नमस्ते अर्थात् मैं आपको नमन करता हूँ। आपका आदर करता हूँ। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नमस्ते का अर्थ लोगों को बतलाया मैं आपका मान्य करता हूँ।



नमस्ते करते समय दोनों हाथों को जोड़कर हृदय के पास लगाकर फिर सिर झुकाकर नमस्ते का उच्चारण करना चाहिए तभी अभिवादन की पूरी प्रक्रिया होती है। इस हाथ हृदय और सिर तीनों के द्वारा श्रद्धाभाव से अपने सामने वाले को आदर सम्मान से नमन किया जाता है।

काफी वर्ष पूर्व एक बार अमेरिका के शिकागो शहर में विष्व धर्म सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर संसार के सभी धर्मचार्यों ने भाग लिया। भारत की ओर से आर्यसमाज के प्रसिद्ध मनीषी आचार्य पंडित श्री अयोध्या प्रसाद जी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

मंच पर जब कोई धर्माचार्य आते थे तो भाषण प्रारम्भ करने से पूर्व सभी धर्माचार्यों ने अपने-अपने ढंग से अभिवादन किया। जब पंडित श्री अयोध्या प्रसाद जी मंच पर भाषण देने पहुँचे तो उन्होंने सर्वप्रथम हाथ जोड़कर नमस्ते शब्द से सभी उपस्थित धर्माचार्यों का अभिवादन किया। तो चारों ओर से इमेज वर्सिसस इमेज वर्सिसस अर्थात् सबसे उत्तम, सबसे उत्तम की ध्वनि गूँज उठी। एक अंग्रेज सज्जन ने विनम्र भाव से पूछा please

explain in English about Namste तब पंडित जी ने नमस्ते की व्याख्या इस प्रकार की "with all the knowledge of my mind, with all the strength of my arms, with all the love of my heart, I bow to the soul unto you" अर्थात् मेरे मस्तिष्क में जितना ज्ञान है, मेरे हाथों में जितनी शक्ति है, मेरे हृदय में जितना प्रेम है उन सबके साथ मैं आपकी आत्मा के प्रति नमन करता हूँ। तब से जब भी सम्मेलन होता था नमस्ते ही बोलकर सबका अभिवादन किया जाता था।

भारत कभी विष्व गुरु कहलाता था क्योंकि हमारे महान तपस्वी ऋशि मुनियों ने परमात्मा द्वारा दिया गया वेद

ज्ञान को सारे विष्व में फैलाने का यत्न किया और विष्व ने इसे स्वीकार भी किया। परन्तु दुःख से कहना पड़ रहा है कि हम ही हैं जिन्होंने अपने इन तपस्वी ऋशि मुनियों की बातों की अनदेखी की है और मनमाना आचरण करते आये हैं। अभिवादन नमस्ते को ही लीजिए इसे बहुत कम लोग ही इसका प्रयोग करते हैं। जो एक वैज्ञानिक शब्द है। आजकल कोई रामराम, कोई जय श्री कृष्ण, कोई हरि ओम, अब तो कोई-कोई राधे राधे कहने लग गये हैं। नमस्कार शब्द भी अभिवादन की पूर्ति नहीं करता है जैसे नमः+कार= नमः का अर्थ नमन परन्तु कार का अर्थ कुछ नहीं है। इसलिए आपको अभिवादन की पूर्ति के लिए मैं आपको नमस्कार करता हूँ इतना कहना होगा तभी अभिवादन की क्रिया पूरी होगी।

अतः अभिवादन का सबसे उत्तम व प्राचीन विधि नमस्ते ही है जिसे सभी भारतीयों को अपनाना चाहिए और वास्तव में अभिवादन की पूर्ति भी हो सके।

वेद सदन, महर्षि दयानन्द मार्ग,  
हिम्मतपुर मल्ला, भगवानपुर रोड हल्द्वानी,  
नैनीताल, उत्तराखण्ड



## अध्यात्मिक परिकत्वता की क्या निशानी है?

डा सत्य पाल पुरी

- 1 जब आप यह समझ लें कि दूसरों को बदलने की बजाये हम खुद को ही बदलें।
  - 2 जब दूसरों के बारे में राय बनाना छोड़ कर, दूसरों को उसी रूप में अपनाना शुरू कर दें जैसे की वह है।
  - 3 जब आप यह समझ लें कि दूसरे भी एक खास हालात में अपनी सोच में ठीक हो सकते हैं।
  - 4 जब आप यह समझ लें कि किसी चीज को भूलना ही ठीक है। जब आप थोड़ा उस बात को भूलते हैं तो थोड़ी शांती मिलती है और जब पूरी तरह से भूल जाते हैं तो पूर्ण शांती मिलती है।
  - 5 जब आप किसी को कुछ देने के बाद उस से कोई अपेक्षा नहीं करते हैं और न ही अपनी बढ़ाई के इच्छुक हैं। केवल एक कर्तव्य और अपना धर्म मान कर देते हैं।
  - 6 जब आप इस बात को सिद्ध करने की कोशिश करना बन्द कर देते हैं कि आप दूसरों से अधिक योग्य है।
  - 7 जब आप अन्दर ही अन्दर किसी प्रशंसा की भूख से ग्रस्त नहीं है।
  - 8 जब आप भौतिक संग्रह से खुशी महसूस नहीं करते और किसी दूसरे के साथ भौतिक संग्रह की दौड़ में ग्रस्त नहीं हैं।
  - 9 जब आप पूर्णतया संतुष्ट हैं और मन अपेक्षाओं से स्वतन्त्र व शांत है।
  - 10 जब आप को लोभ और आवश्यकता में फर्क की समझ आ गई है।
  - 11 जब आप को यह समझ आ गई है कि दरिद्रनारायण की सेवा ही ईश्वर की सच्ची भक्ति है।
  - 12 जब आप को यह समझ आ गई है कि जो मैं दुख भोग रहा हूं वह मेरे गलत कर्मों का फल है और कोई दूसरा इस के लिये जिम्मेवार नहीं।
  - 13 जब आप अपनी पहचान शरीर से नहीं बल्कि आत्मा से करते हैं।
- आप पंजरब युनिवर्सिटी से फिजिक्स विभाग के चैयरमैन पद से रिटायर हुये हैं। 90 वर्ष पूरे कर चुके हैं व बहुत सक्रिय हैं। उन से बात करने में वही सुख मिलता है जो कि किसी देवता से मिलने पर प्राप्त होता है। यह वैदिक थोटस का सौभाग्य है कि वह हमारे साथ जुड़े हुये हैं।

**भारतवर्ष में बहन और भाई के गूढे सम्बन्धों का दुनिया में अलग ही स्थान है।  
इस में रक्षाबन्धन व भैयादूज के त्योहार बहुत अहम भूमिका निभाते हैं**



# Handling of Covid 19 by Govt ---- a misconception perpetuated

Dinesh Sud

There is a general perception that the handling of Covid 19 crisis by our government has been quite good. To me it is a misconception perpetuated by our pliant media and later reinforced by PM himself as this event unfolds. On 26<sup>th</sup> June 2020, speaking in UP, the Prime Minister complimented UP Chief Minister Yogi Aditya Nath for handling of Covid crisis by comparing death rate in UP with that of four large countries of Europe (Italy, UK, Spain and France) whose population is almost equal to that of UP. But the PM conveniently ignored the fact that the record of more than half the countries of the world is better than these laggards. It is like a below average student patting himself for scoring better marks than back benchers.



So where does India stand in terms of its Covid management performance? Before we answer that question we need to fix some criterion for comparison.

1. Number of cases per million of population
2. Number of deaths per million of population

But, before we proceed we must keep in mind that the fatalities from Covid have been much lower in Asian and African countries than in Europe and America. Experts give different reasons for this like:

1. Immunity of developing world population is higher
2. BCG inoculation during childhood improves immunity against Covid
3. Genetic makeup of White population makes it more susceptible to Covid
4. Higher percentages of the younger population in countries like India give them an edge as the old people are more vulnerable.

Jury is still out as to what is the actual cause of low death rates in Asian and African countries though Middle East is an exception to this theory.

Let us compare India's performance with 215 countries for which data is available in public domain.

As far as cases per million are concerned, India with 1187 cases stands at 118 among 215 countries. In other words, more than half of the total countries have done better than India when it comes to managing covid and these include Ghana, Philippines, Congo, Indonesia, Kenya,

Zambia, Malaysia, Sudan, Somalia, Rwanda, Ethiopia, Sri Lanka, Vietnam, Thailand and Uganda.

Now let us come to deaths per million. With 26 deaths per million, we are just one notch better than much ridiculed Pakistan. Not to forget that Pakistan did not force a strict lockdown as we did in India . Even if this strict lockdown saved a few lives from covid , it resulted in damaging the economy beyond any signs of redemption in the foreseeable future and killing many times more people due to the restrictions on travel, hospitalisation etc. Here again our standing is 117 out of 215. In fact, every Asian country to the east of India, including Japan, South Korea and Taiwan, has less deaths per million than India. Our performance is still more disappointing when compared with Asian and African Countries.

Fact of matter is that we failed at both, Covid management as well as arresting the crippling effect of the virus on the economy. Performance of all our neighbouring countries has been far better than India in this regard, though we are taught not to accept any good point of our neighbours.

Asa it looks, situation continues to assume alarming proportions in India. It is high time for the government to wake up and ramp up medical facilities and testing before the crisis gets out of hand.

## पुस्तक

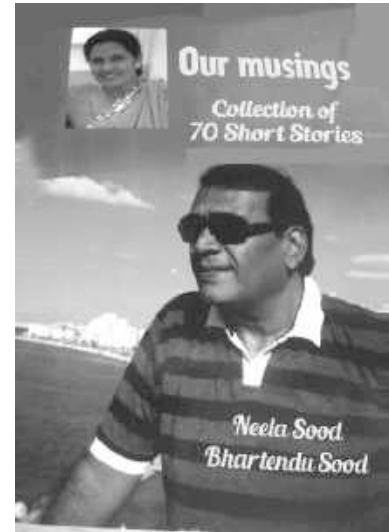
### (English Book of short stories--Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम Our Musings है। इस पुस्तक की कीमत 150 रुपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रु भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही हैं जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक इंगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है



**नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381**

**पत्रिका में दिये गये विचारों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखकों के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलों के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।**

**Publisher & Printer** Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590  
**Owner** Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047  
**Phone** : 0172-2662870 (M) 9217970381 **Name of Editor** : Bhartendu Sood

# मिस कैथरीन मेयो की बहुचर्चित पुस्तक 'मदर इण्डिया' से

कृष्ण चन्द्र गर्ग



(मिस कैथरीन मेयो एक अमरीकी इतिहासकार महिला थी। उसने भारत में घूमकर जो देखा सो 'मदर इण्डिया' पुस्तक में लिखा। यह पुस्तक 1927 में अंग्रेजी में छपी थी। उस समय भारत के हिन्दू नेताओं ने इसकी कड़ी आलोचना की थी।)

भारत में काली के छोटे-बड़े हजारों मन्दिर हैं। कलकत्ता का काली मन्दिर एक ब्राह्मण परिवार की निजी सम्पत्ति है जो तीन शताब्दियों से उनके पास है। इस मन्दिर की अपनी 590 एकड़ जमीन है। मैं उस मन्दिर को देखने गई। मन्दिर में अचानक एक मिमियाने की चीतकार सुनाई दी। वहां दो पुरोहित खड़े थे। एक के हाथ में तलवार थी और दूसरा बकरी के बच्चे को पकड़े हुए था। बकरी का बच्चा चीख रहा था क्योंकि हवा में हिंसा की गन्ध थी जिसे सूंघकर प्राणी सिहर जाते हैं।

तेज धार तलवार से उस नन्हीं-सी जान का सिर काट दिया गया। धरती पर गिरे खून को एक औरत 'बच्चा पैदा होने की आशा में' जीभ से चाटने लगी। एक ब्राह्मण ने मुझे बताया कि 'हम यहां इसी तरीके से प्रतिदिन 150 से 200 तक बकरी के बच्चों को मारते हैं। इन मेमनों को बलि के लिए भक्त लोग ही पूजा के लिए लाते हैं। हर मेमने को बलि से पहले पवित्र नदी में स्नान कराकर शुद्ध किया जाता है।'

लड़कियों के लिए विवाह की आयु अंग्रेज सरकार ने रूढ़ीवादी हिन्दुओं के साथ लम्बी लड़ाई के बाद 1891 में 10 से बढ़ाकर 12 वर्ष की थी। 1925 में लड़कियों की विवाह के लिए आयु 14 वर्ष करने वाला प्रस्ताव पास न हो सका। फिर लड़कियों से सहवास की आयु विवाहित के लिए 13 वर्ष और अविवाहित के लिए 14 वर्ष वाला बिल समझौते के तौर पर पास करना पड़ा। रूढ़ीवादी हिन्दू बाल विवाह को रोकने वाले कानून को अपने धर्म के खिलाफ मानते हैं। रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपने लेख 'दि इण्डियन आइडियल ऑफ मैरिज' में लिखा था कि बाल विवाह एक उन्नत आत्मा का फल है।

8, 9 वर्ष की आयु में लड़कियों के विवाह कर दिये जाते हैं। छोटी उमर में विवाह के कारण लड़कियां अस्वस्थ होकर जल्दी मर जाती हैं। इनके बच्चे भी मरे हुए पैदा होते हैं या जल्दी मर जाते हैं। भारत में 60: बच्चे जन्म के एक महीने के अन्दर मर जाते हैं। बड़ी उमर के विधुर पुरुष भी छोटी उमर की लड़कियों से विवाह करते हैं क्योंकि वे विधवा के साथ विवाह नहीं करते और बड़ी उमर की कुंवारी लड़की मिलती नहीं। एक 60 वर्षीय शिक्षित पुरुष ने 9 वर्ष की लड़की से विवाह किया और जनता में उसका सम्मान भी बना रहा।

सरकारी गणना के अनुसार भारत में विधवाओं की कुल संख्या 2,68,34,838 है। देश की कुल आबादी 31 करोड़ 90 लाख है।

मद्रास प्रान्त में देवदासी प्रथा है। माता-पिता देवताओं की कृपा पाने के लिए अपनी सुन्दर पुत्री को मन्दिर में भेंट कर देते हैं जो वहां वेश्या का जीवन बिताती है।



पद्मपुराण के अनुसार स्त्री के लिए उसके पति के सिवा कोई दूसरा भगवान पृथ्वी पर नहीं है। पति कैसा भी हो – लूला-लंगड़ा, बूढ़ा, बिमार, अपराधी, क्रोधी, विलासी, दुराचारी, शराबी, जुआरी। पति की आज्ञा का पालन करना, उसे प्रसन्न रखना स्त्री का धर्म है।

ब्रिटिश गवर्नर ने 1828 में राजा राममोहन राय के सहयोग से सती प्रथा के विरुद्ध कानून बनाया था।

ब्राह्मण निम्न जातियों को अनपढ़ तथा अज्ञानी रखकर उनका दमन करते हैं। निम्न जाति का एक व्यक्ति बताता है – चूंकि अंग्रेजों ने हमें इनके दमन से बचा लिया है। इसलिए ब्राह्मण अंग्रेजों से भी नफरत करते हैं। यहां 'अंग्रेज वापिस जाओ' का नारा लगाकर देशभक्ति का प्रदर्शन किया जाता है। और हम लोग जानते हैं कि अगर अंग्रेज चले गए तो जो स्थिति हमारी पहले थी फिर वही लौट आएगी। हमारे लिए समुद्र पार का वह राजा ही बेहतर है जो हमें शांति और न्याय देता है। हमारे धन के बदले में भी वह हमें कुछ देता है। साथ ही हमें उन लाखों ब्राह्मण मालिकों से भी स्वतन्त्र बनने का अवसर दे रहा है जो हमें खा जाना चाहते हैं और छूने पर कहते हैं कि हमने उन्हें अपवित्र कर दिया।

हिन्दू कानून के अनुसार 1926 में अछूतों की स्थिति – कुछ अछूतों से सिर्फ सफाई करने और मैला उठाने का काम लिया जाता है। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने की सख्त मनाही है। हिन्दू धर्म ग्रन्थों को वे अपने पास नहीं रख सकते और उन्हें पढ़ नहीं सकते। ज्यादातर मन्दिरों में पूजा-पाठ के लिए वे जा नहीं सकते। उनके बच्चे पब्लिक स्कूलों में पढ़ नहीं सकते। वे सार्वजनिक कुओं से पानी नहीं ले सकते। किसी सराय में वे नहीं ठहर सकते। ऐसे बहुत से बन्धन अछूतों पर हैं।

भागवत पुराण के अनुसार जो भी ब्राह्मण की हत्या का दोषी होता है वह अपनी मृत्यु के बाद टट्टी खाने वाले कीड़े के रूप में जन्म लेता है। यदि ब्राह्मण शूद्र की हत्या करता है तो उसके लिए उस हत्या के पाप से मुक्त होने के लिए केवल गायत्री मन्त्र का सौ बार जाप करना ही काफी है।

भारत में अंग्रेजों की पहली प्रवृत्ति सामाजिक अन्याय के कारणों को दूर करने की थी। 1854 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के निदेशकों में यह सिफारिश की थी कि जाति के आधार पर किसी भी लड़के को स्कूल या कॉलेज में प्रवेश देने से रोका नहीं जाए।

बहुत से अछूत ईसाई बनने के बाद स्वतन्त्र हो गए हैं। ईसाई मिशनरियों की सहायता से अंग्रेजों ने अछूतों को सामाजिक खाई से निकालने के लिए शिक्षित करने और उनका साहस बढ़ाने का काम किया है। अंग्रेज भारत में परिवर्तन का स्रोत हैं।

मद्रास द्रविड़ जनसभा का कहना है कि हिन्दुओं की जाति प्रथा हमें अछूतों के रूप में कलंकित करती है। हमारा सामाजिक और आर्थिक उत्थान ब्रिटिश सरकार के आने से शुरू हुआ है और उसी कारण जारी है। अतः हम लोग स्वराज के प्रबल विरोधी हैं। हम अपने रक्त की अंतिम बून्द तक अंग्रेजों को भारत की सत्ता हिन्दुओं के हाथों में सौंपे जाने के प्रयास के खिलाफ लड़ेंगे। अंग्रेजों के कानून ही हमारे रक्षक हैं।

1921 के अन्त में जब ब्रिटेन के राजकुमार भारत आए थे तब गान्धी और उसके चेलों ने उनका विरोध किया था। परन्तु अछूतों ने उनका स्वागत किया था। दूर-दूर से बहुत से अछूत उनके दर्शन के लिए आए थे। वे नारे लगा रहे थे – सरकार की जय हो, युवराज की जाय हो, राजा के बेटे की जय हो, और खुश होकर तालियां बजा रहे थे। अछूतों के प्रतिनिधि ने छे करोड़ अछूतों की तरफ से युवराज के सामने प्रार्थना



की कि वे अपने पिता से कहें कि हमारे जीवन को उन लोगों के हाथों में न छोड़ें जो हमसे घृणा करते हैं और हमें गुलाम बनाए हुए हैं।

लार्ड मैकाले ने भारी उत्साह से पाश्चात्य शिक्षा के पक्ष में घोषणा की। उसने कहा 'हम उस इतिहास को क्यों पढ़ाएं जिसमें 30 फीट उँचे राजाओं की भरमार है और जो 30 हजार साल तक राज करते थे। हम उस भूगोल पर क्यों धन नष्ट करें जिसमें शीरे और मक्खन से भरे हुए समुद्र का वर्णन है। इस तरह हम अरबी और संस्कृत कालेजों पर जो खर्च करते हैं वह धन की ही नहीं, अपितु सत्य की पूर्ण हानि है। यह धन मूर्खों को पैदा करने के लिए खर्च किया जाता है।'

1857 से 1887 तक इन 30 वर्षों में कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, लाहौर, इलाहाबाद में पाँच विश्वविद्यालय स्थापित हुए।

भारतीय लोग स्त्रियों को और शूद्रों को शिक्षा देने के पक्ष में नहीं हैं। फिर भी अंग्रेज सरकार भारतीयों को शहरों में और गांवों में भी शिक्षित करने का पूरा प्रयास कर रही है।

1858 में महारानी विक्टोरिया ने भारत सरकार का नियन्त्रण अपने हाथ में लेने के बाद घोषणा की थी – जहां तक हो सकता है हमारी सारी प्रजा को – चाहे वह किसी भी जाति या धर्म का हो – योग्यता के आधार पर नौकरियां दी जाएं और उनके साथ कोई पक्षपात न किया जाए।

भारत में अंग्रेजों की कुल संख्या – स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों समेत – दो लाख से कम है।

हिन्दुओं के लिए गाय पूजा की वस्तु है। उसके रख-रखाव, खान-पान पर अधिक ध्यान नहीं है। अच्छी नसल के सांड भी यहां नहीं हैं। मुझे पूरे भारत में यह देखकर दुख होता है कि यहां पर लोग बैलों की पूंछों को उनके जोड़ से मोड़कर उनको बहुत यातना देते हैं। यह भारत की अजीब पहेली है कि बैल ही जिस व्यक्ति की श्रेष्ठ सम्पत्ति है, वह जान बूझकर उन्हीं पर ज्यादा बोझ लादता है। हिन्दू ग्वाला बछड़े को नहीं चाहता। वह उसे इतना थोड़ा दूध पिलाता है कि वह मर जाता है। फिर उसकी खाल में भूसा भरकर नकली बछड़ा बनाकर गाय को दिखाकर दूध दोहता है।

1890 में गवर्नर जनरल ने पशु कूरता निवारण अधिनियम को पारित किया था जिसके अनुसार किसी भी पशु की कूर तरीके से हत्या करने का निषेध किया गया था। एक विधेयक 16 मार्च 1926 को सरकार ने बंगाल की विधान परिषद में भैंसों से खींचे जाने वाले रेहड़ों पर ज्यादा बोझ लादने के विरुद्ध पेश किया था।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी को जिन प्राचीन देशी आतंक के उन्मूलन का श्रेय जाता है उनमें गला घोटकर मारने वाली पेशेवर जनजातियों और ठगों के समृद्ध व्यापार का उन्मूलन, विधवाओं को जिन्दा जलाने और कुष्ठ रोगियों को जिन्दा दफनाने की प्रथा का उन्मूलन उल्लेखनीय है।

भारत में राजे-महाराजे – भारतीय साम्राज्य की कुल जनसंख्या 31 करोड़ 90 लाख है जिनमें 23: लोग भारतीय रियासतों में रहते हैं। 1858 में महारानी विक्टोरिया ने एक घोषणा-पत्र में कहा था – 'हम देशी राजाओं को अपना मानते हुए उनके अधिकारों, उनकी गरिमा और मान-मर्यादा का सम्मान करते हैं। ब्रिटेन अपने क्षेत्र का विस्तार करने की कोई इच्छा नहीं रखता। लेकिन भारतीय रियासतों पर किसी अन्य को भी आक्रमण करने की अनुमति नहीं देगा।'

राजे—महाराजे खुलकर कहते हैं कि वे ब्रिटिश शासन में बहुत प्रसन्न हैं। यह उनको भारी भरकम सेना रखने के खर्चों से बचाता है। यह रेलमार्ग, अच्छी सड़कें, बन्दरगाह, बाजार, डाक और तार सेवा जैसी सार्वजनिक सुविधाएं भी उपलब्ध कराता है। उन्हें शान्ति से अपनी सम्पत्तियों का विकास करने की भी अनुमति देता है। युद्ध के समय इन राजे—महाराजों का व्यवहार पूरी तरह राजभक्ति वाला था। उन्होंने साम्राज्य के लिए पूरी उदारता से धन, जनशक्ति और सामग्री उपलब्ध कराई थी। इनकी जबरदस्त रुचि इस बात में रहती है कि ब्रिटिश ताज भारत में अधिपति के रूप में बना रहे।

मुसलमानों के शासन काल में फारसी ही कचहरी की भाषा थी, फारसी ही साहित्य की भाषा थी और फारसी ही कविता और कानून की भाषा थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने न्यायालयों की भाषा को फारसी से बदलकर अंग्रेजी कर दिया। 1844 में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीयों को सरकारी नौकरी में प्राथमिकता दी जाने लगी। सरकारी नौकरी में हिन्दू अंग्रेजी भाषा सीखने लगे। मुसलमानों ने इस परिवर्तन का दृढ़ता से विरोध किया।

मुस्लिम लीग के अध्यक्ष अब्दुरहीम के कान्तिकारियों के सम्बन्ध में विचार — 'मुझे नहीं पता कि कोई राजनैतिक कार्यक्रम कान्तिकारियों के पास है। उनका तात्कालिक उद्देश्य स्पष्ट रूप से ब्रिटिश शासन को और साथ ही सरकार की वर्तमान सारी प्रणाली को उखाड़ फेंकना है। हम इन कान्तिकारियों को बर्खास्त कर सकते हैं क्योंकि इनके सफल होने की जरा भी सम्भावना नहीं है। हम मुसलमानों का 1300 वर्ष का इतिहास है। हमने पूरे एशिया, अफ्रीका और योरोप में निरन्तर संघर्ष और युद्ध किया है। पर हम वह काम नहीं कर सकते जो ये अत्यन्त मूर्ख और पागल लोग करते हैं। जो सोचते हैं कि कभी भी कुछ बम फेंककर या पीछे से एक—दो अंग्रेजों को गोली मारकर वे भारत में ब्रिटिश सत्ता की बुनियादों को हिलाने जा रहे हैं। हम हिस्टीरिया से पीड़ित ऐसे लड़कों या व्यक्तियों को गम्भीर राजनीतिक नहीं मानते। और यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि एक भी मुसलमान उनके साथ नहीं है।'

धार्मिक नगरी बनारस — यहां तटों के पास कोई शौचालय नहीं है। इस काम के लिए लोग पानी के किनारे रेतीले स्थानों का प्रयोग करते हैं। नदी के किनारे जो शुष्क मल होता है वह नदी के पानी में बह जाता है। कोई भी हिन्दू मृतक बच्चे को जलाता नहीं, उसे नदी में फेंक दिया जाता है। अब जो भी बनारस की गंगा में नहाता है या गंगा का पानी पीता है वह गम्भीर बिमारियों का शिकार हो जाता है। लाखों श्रद्धालु उसी पानी को पीते हैं, उसी से नहाते हैं और उसमें कपड़े धोते हैं। बाद में उस पानी को बर्तनों में भरकर अपने घरों को ले जाते हैं। 1905 में अंग्रेजों ने कड़े धार्मिक विरोध के बावजूद शहर में एक आंशिक सीवरेज सिस्टम और पानी की पाईप लाईन बिछाने में सफलता प्राप्त की थी।

गान्धी कहता है कि अस्पताल पाप के प्रचारक संस्थान हैं। योरोपियन डाक्टर सबसे बुरे हैं। ये डाक्टर मानवता का सिरफ दिखावा करते हैं। फिर जब गान्धी पेट दर्द से बिमार हुआ वह खुद अस्पताल गया और उसने अपना अपैडिसाइटिस का ओपरेशन उन्हीं डॉक्टरों से करवाया। गान्धी कहता है कि रेलवे सर्वाधिक खतरनाक संस्था है। गान्धी और उसके अनुयायी मानते हैं कि भारत के लोग ब्रिटिश सरकार के कारण तेजी से और भी गरीब तथा दयनीय होते जा रहे हैं। गान्धी आरोप लगाता है कि हिन्दू मुसलमानों के मतभेदों के पीछे ब्रिटेन का हाथ है। भारतीय विधानसभा के मुस्लिम सदस्य मौलवी मोहम्मद याकूब का कहना है कि मैं उनसे सहमत नहीं हूँ जो साम्प्रदायिक दंगे और भावनाएं भड़काने में सरकार का हाथ समझते हैं। मद्रास के दीवान बहादुर टी रंगाचारी का कहना है कि वर्तमान सरकार के साथ असहयोग से हमारा कुछ भी भला नहीं हुआ।

कृष्ण चन्द्र गर्ग, 0172-4010679  
kcg831@yahoo.com

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



# महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय - 1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059  
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली  
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

## NAMRATA SONI CELEBRATED HER BIRTHDAY WITH NGO CHILDREN COPY



धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

A/c No. : 32434144307

Bank : SBI

IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G





स्वर्गीय  
श्रीमती शारदा देवी  
सूद

निर्माण के 63 वर्ष

# गौस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई  
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)



स्वर्गीय  
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त  
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaligar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajjabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

**Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.**

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

**0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in**

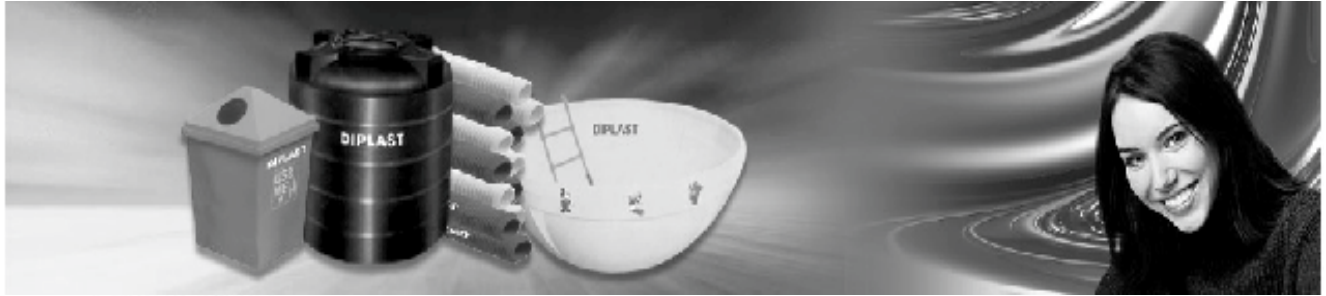
जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram



Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children



# मजबूती में बे-मिसाल

## घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years  
in service



# DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India  
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224  
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

**QUALITY IS OUR STRENGTH**

## विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश,  
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये  
शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh  
9217970381 and 0172-2662870